दैनिक जागरण, भोपाल
17 JUN 2011

मध्यप्रदेश में नाट्य विद्यालय का औचित्य।

संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन ने कला प्रस्तुतियों की दिशा में राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय स्तर के अनेक समारोहों की स्थापना की है, जिनका राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा महत्व है। कुछ समारोहों की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। सांस्कृतिक वैविध्य का संरक्षण, विस्तार और दस्तावेजीकरण एक पक्ष है, जिससे विभाग के उद्देश्य की पूर्णता नहीं होती। कलात्मक शिक्षण-प्रशिक्षण के बगैर कला परम्पराओं का वास्तविक संरक्षण संभव नहीं है। इस विचार के क्रियान्वयन के लिए पहले हमने शास्त्रीय नृत्य और गायन के प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापनाएँ की हैं। अनेक उत्सुक लोग इसका प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं; इसी मूल विचार के विस्तार के तहत हमने नाटक के अध्ययन एवं प्रशिक्षण की विधिवत व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए नाट्य विद्यालय की स्थापना का संकल्प लिया है। नाट्य विद्यालय के विद्यार्थियों को इस विधा के सभी पक्षों का अध्यापन एवं प्रशिक्षण दिया जायेगा। विषय विशेषज्ञों के साथ विमर्श और व्याख्यान सत्र भी समय-समय पर आयोजित किये जायेंगे। प्रशिक्षण उपरान्त विद्यार्थी इस क्षेत्र में अपनी रूचि और प्रतिभानुसार नई संभावनाओं पर कार्य एवं शोध कर सकेंगे।

वैसे भी मध्यप्रदेश की पारम्परिक समृद्ध संस्कृति में नाटक के बीज मौजूद हैं। मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक जनपदों में मालवा का लोकनाट्य 'माच' प्रसिद्ध है, इसी प्रकार बुन्देलखण्ड में स्वांग, निमाड़ में गम्मत लोकनाट्य की परम्परा है। इसके साथ ही पौराणिक आख्यानों के रंगमंचीय प्रदर्शन और उसके आस्वादन की परम्परा में रही है। लोक की अवधारणा में लोकनाट्यों की विषयवस्तु के केन्द्र में रंजकता की प्रधानता रही है। प्रहसन के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों तथा नैतिक मूल्यों की रक्षा का संदेश जनमानस में दिया जाता है। इस सदियों पुरानी कला परम्परा और युक्ति का पुनराविष्कार और संरक्षण हो। समकाल में भी इस परम्परा के प्रति युवावर्ग उत्सुक हो, इस दृष्टि से मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय की स्थापना प्रदेश सरकार कर रही है। इस अद्वितीय कदम के लिए प्रदेश सरकार और भारतीय जनता पार्टी की कलात्मक दृष्टि निश्चय ही धन्यवाद की पात्र है।

गणेश भालचंद्र बागदरे
सदस्य, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद